



भारत में जैविक कृषि की वर्तमान प्रवृत्तियाँ, अवसर एवं चुनौतियाँ

सुषमा देवी* एवं डॉ. के. एस. नेताम²

¹ शोधार्थी, भूगोल विषय, शोध केन्द्र प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एकसीलेंस, संजय गाँधी स्मृति शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीधी (म.प्र.), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

² प्राध्यापक, भूगोल, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एकसीलेंस, संजय गाँधी स्मृति शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीधी (म.प्र.), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

*Corresponding author: सुषमा देवी

Received 21 Feb 2026; Accepted 2 Apr 2026; Published 10 Apr 2026

DOI: <https://doi.org/10.64171/JSRD.5.2.19-27>

Abstract

उपभोक्ता अपने स्वास्थ्य, पर्यावरण और स्थिरता के प्रति जिस तरह जागरूक हो रहे हैं उसी तरह जैविक उत्पादों की मांग बढ़ी है। जिसके कारण जैविक कृषि के प्रति किसानों के लिये नये अवसर सृजित हुये हैं। लेकिन इन अवसरों के साथ-साथ जैविक किसानों को कुछ चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। भारत में जैविक उत्पादों का एक विशाल बाजार है। भारत सरकार जैविक कृषि को अपनाने के लिये किसानों को सब्सिडी भी प्रदान करती है। इन अवसरों के बावजूद जैविक कृषि के बारे में जागरूकता की कमी, प्रमाणन प्रक्रिया को लेकर भ्रम एवं कृषि में उपयोग होने वाले सामग्रियों की उच्च कीमत जैसे कुछ चुनौतियाँ भी हैं। इन चुनौतियों को कम करने के लिए सरकार से सहयोग व समर्थन के साथ-साथ जैविक उत्पादों के लिए सहायक मूल्य प्रदान करना, गोदाम सुविधाएँ उपलब्ध कराना, कृषकों को प्रमाणन प्रक्रिया और लोगों को इसके बारे में जागरूक करने की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध आलेख द्वितीयक आंकड़ों व तथ्यों पर आधारित है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कृषकों को आधुनिक कृषि से जैविक कृषि में परिवर्तन के दौरान सामना किये गये अवसरों एवं चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है।

Keywords: जैविक कृषि, स्वास्थ्य, पर्यावरण, स्थिरता, अवसर एवं चुनौतियाँ

Introduction

जनसंख्या के मामले में भारत विश्व में दूसरा सबसे बड़ा देश है, और इसकी अधिकांश जनसंख्या कृषि गतिविधियों पर निर्भर है। कई दशक पहले किसान पारंपरिक खेती के तरीकों का उपयोग करते थे, लेकिन जनसंख्या में वृद्धि के कारण खाद्य उत्पादों की मांग बढ़ गई, जिसके परिणामस्वरूप कृषि में आधुनिक नवाचारों और तकनीकों को अपनाया गया। मानव जनसंख्या द्वारा खाद्यान्नों की भारी मांग ने कृषि को एक चक्रीय मॉडल से रैखिक प्रवाह मॉडल में बदल दिया, जिसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों जैसे बाहरी आदानों पर पूर्ण निर्भरता थी। इन सामग्रियों के व्यापक उपयोग ने कृषि उपज को कई गुना बढ़ा दिया, लेकिन इससे पर्यावरण का अत्यधिक क्षरण होने के साथ-साथ इससे ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन भी बढ़ा है। स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं संधारणीयता से संबंधित सवालों के प्रति उत्तर के रूप में जैविक कृषि की आधुनिक अवधारणा का उदय हुआ। जैविक कृषि पद्धति मिट्टी के गुणों को बेहतर बनाने, खाद्य श्रृंखला से जुड़े स्वास्थ्य खतरों को कम करने, पोषक तत्वों का पुनर्चक्रण और पुनः उपयोग को सुनिश्चित करने और फसल चक्रण प्राप्त करने के लिए जैविक पदार्थों के उपयोग पर जोर देती है। इस तरह की कृषि प्रणाली से कृषि पारिस्थितिकी तंत्र अधिक टिकाऊ बनते हैं। विकासशील देशों के लिए कृषि विकास नीति को कम लागत, उच्च दक्षता और मानव व पर्यावरण को न्यूनतम नुकसान के साथ खेती योग्य भूमि की उत्पादकता बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए। हरित क्रांति वाली कृषि अब कम टिकाऊ है। इसलिये, जीवन और संपत्ति के अस्तित्व के लिए प्राकृतिक संतुलन को हर कीमत पर बनाये रखना आवश्यक है। जैविक कृषि खाद्य सुरक्षा को बढ़ावा देती है, विशेष

रूप से पारंपरिक या कम निवेश वाली प्रणालियों में कार्यरत छोटे किसानों के लिए, क्योंकि यह उपज और आय में सुधार, विविधीकरण और मिश्रित खेती के माध्यम से खाद्य उपलब्धता को बढ़ाती है। साथ ही चरम जलवायु घटनाओं के मामले में फसल विफलता की संभावना को कम करती है।

पर्यावरण संरक्षण में जैविक कृषि एक महत्वपूर्ण और सुरक्षात्मक भूमिका निभाती है। वर्षों से जैविक और पारंपरिक कृषि के पर्यावरण पर प्रभाव का व्यापक अध्ययन किया गया है। ऐसा माना जाता है कि जैविक कृषि पर्यावरण के लिए कम हानिकारक है क्योंकि इसमें रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। इस तरह की कृषि से अधिकांश जल, मिट्टी और स्थानीय स्थलीय एवं जलीय वन्यजीवों के लिए कोई हानि भी नहीं होती है। इन सबके अतिरिक्त, फसल चक्र के कारण जैविक कृषि जैव विविधता को बनाये रखने में पारंपरिक कृषि से अधिक बेहतर है। जैविक कृषि मिट्टी के भौतिक-जैविक गुणों में सुधार करती है, जिसमें पारंपरिक रूप से कृषि की जाने वाली मिट्टी की तुलना में इस तरह की कृषि में अधिक कार्बनिक पदार्थ, बायोमास, उच्च एंजाइम, मिट्टी की बेहतर स्थिरता, कम जल रिसाव व धारण क्षमता, कम पानी और वायु अपरदन शामिल हैं। जैविक कृषि कम ऊर्जा का उपयोग करती है और प्रति इकाई क्षेत्र या प्रति इकाई उपज में कम अपशिष्ट उत्पन्न करती है। इसके साथ-साथ जैविक रूप से प्रबंधित मृदा की गुणवत्ता और जल धारण क्षमता अधिक होती है, जिसके परिणामस्वरूप सूखा पड़ने की स्थिति में भी जैविक कृषि वाले खेतों से अधिक उपज प्राप्त होती है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध आलेख के निम्नलिखित उद्देश्य हैं—

- जैविक कृषि के सिद्धांत का विश्लेषण करना।
- भारत में जैविक कृषि की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।
- जैविक कृषि के विकास के लिये उन कारकों का मूल्यांकन करना जो देश में इस कृषि प्रणाली को अपनाने में सहायक हो सकते हैं।

शोध प्रविधि एवं आंकड़ों का संकलन

यह शोध आलेख द्वितीयक आंकड़ों व स्रोतों पर आधारित है। जैविक कृषि के बारे में जानकारी विभिन्न प्रकाशित स्रोतों जैसे कृषि प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद और निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) से प्राप्त की गई है। भारत की भागीदारी गारंटी प्रणाली (पीजीएस) वेब पोर्टल, राष्ट्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती केन्द्र आदि के वार्षिक प्रतिवेदन, विभिन्न प्रकार के जैविक कृषि से संबंधित शोध पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों से संकलित की गई है।

प्रस्तुत अध्ययन में जैविक उत्पादों के क्षेत्र, उत्पादन, उत्पादित वस्तुओं की प्रकृति और निर्यात का विश्लेषण किया गया है। भारत में जैविक कृषि के परिणाम और दिशा का अध्ययन करने हेतु विभिन्न समयवधियों के लिए विकास की गति को मापने हेतु वृद्धि दर का उपयोग किया गया है। साथ ही क्षेत्रीय स्तर पर राज्यवार आंकड़ों के तुलनात्मक विश्लेषण हेतु संकलित आंकड़ों को सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया है।

साहित्य समीक्षा

खाद्य गुणवत्ता और स्वास्थ्य सुरक्षा ये दो महत्वपूर्ण कारकों ने आम लोगों का निरंतर ध्यान आकर्षित किया है। बढ़ती पर्यावरणीय जागरूकता और कई खाद्य खतरों ने पिछले कुछ दशकों में खाद्य गुणवत्ता के प्रति उपभोक्ताओं का भरोसा काफी हद तक कम किया है। जहरीले रासायनिक यौगिक (डाइऑक्सिन) जो औद्योगिक प्रक्रियाओं, कचरा जलाने, या रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग से पर्यावरण में फैलते हैं। जिससे कैंसर जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्यायें पैदा होती हैं। साथ ही अस्वच्छ खेती की प्रथायें, प्रसंस्करण, या भंडारण के कारण खाद्य पदार्थ बैक्टीरिया (जैसे सैल्मोनेला या ई. कोलाई) से दूषित हो जाते हैं और स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। बोवाइन स्पॉन्जिफॉर्म एन्सेफैलोपैथी यह एक गंभीर बीमारी है जो पशुओं (खासकर गायों) में होती है। इसे मैड काउ डिजीज भी कहते हैं। दूषित मांस के सेवन से यह बीमारी मनुष्यों में भी फैल सकती है। इससे मांस और डेयरी उत्पादों की गुणवत्ता पर उपभोक्ताओं का विश्वास कम हुआ है। पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के कारण उपभोक्ता अब खाद्य गुणवत्ता को लेकर ज्यादा सतर्क हैं। वर्तमान समय में उपभोक्ता सुरक्षित स्वस्थ और पर्यावरण के लिए बेहतर खाद्य विकल्प चाहते हैं, जिसके चलते जैविक कृषि की मांग बढ़ी है।

चंद्रशेखर, एच. एम. (2010) [6] ने शोध आलेख में जैविक कृषि के परिदृश्य को बदलने के तरीके का उल्लेख किया है। अध्ययन में पाया गया कि भारत जैसे देश में, जहाँ श्रम प्रचुर और अपेक्षाकृत सस्ता है, रासायनिक कृषि की बढ़ती लागत के कारण जैविक कृषि को एक लागत-प्रभावी समाधान के रूप में देखा जाता है। विकसित देशों में जैविक खाद्य उत्पादों की बढ़ती माँग और भारतीय सरकार का व्यापक समर्थन, विशेष रूप से कृषि-निर्यात पर ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ भारतीय जैविक खाद्य उद्योग के लिए प्रेरक

शक्तियाँ हैं। वहीं रेड्डी, बी. एस. (2010) [16] ने अपने शोधपत्र में स्पष्ट किया कि जैविक कृषि की स्थिति में परिवर्तन को आसान या सस्ता बनाने के लिए सरकारी सब्सिडी की कमी है। जैविक कृषि के प्रसार के लिये इसकी व्यवहारिकता, वित्तीय स्थिति और जैविक आदानों की उपलब्धता और ज्ञान को बढ़ाया जाना चाहिये। इसको उचित प्रोत्साहन मिलने पर, विशेष रूप से देश के शुष्क क्षेत्रों में, विविध मृदा और जलवायु परिस्थितियों का लाभ उठाते हुये, जैविक कृषि में जबरदस्त प्रगति हो सकती है। भारत में जैविक किसानों के अवसरों और बाधाओं का विश्लेषण करते हुये पांडे, जे. एवं सिंह, ए. (2012) [14] ने अपने शोध आलेख में उल्लेखित किया है कि किसानों को जैविक संपूरक, जैव उर्वरक और जैविक उत्पादों के लिये स्थानीय बाजार की अपर्याप्त उपलब्धता की समस्या का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, किसानों को उचित दिशानिर्देशों, प्रमाणन और आदान लागतों तक पहुँच की कमी है। साथ ही अनुबंध फर्मों द्वारा पूंजी-प्रधान विनियमन के कारण छोटे किसान हतोत्साहित होते हैं। भारत में जैविक कृषि प्रथाओं की स्थिरता के प्रभाव को विश्लेषित करते हुये यादव, एस. के. एवं अन्य (2013) [22] ने कहा है कि जैविक कृषि मृदा के स्वास्थ्य और पर्यावरण को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किये बिना गुणवत्तापूर्ण खाद्यान्न प्रदान करती है। इसके क्षेत्रीय आधार पर अंतरराष्ट्रीय बाजार की माँग वाले उपयुक्त फसलों/उत्पादों की पहचान करने की आवश्यकता है। हालाँकि, संपूर्ण कृषि क्षेत्र को एक साथ जैविक कृषि में परिवर्तित करना संभव नहीं है, क्योंकि खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने की प्रतिबद्धता भी है। देशमुख, एम. एस. एवं बाबर, एन. (2015) [9] ने अपने लेख में जैविक कृषि की वर्तमान स्थिति और संभावनाओं पर चर्चा की है। इस आलेख में कृषि प्रणाली, फसल भूमि प्रबंधन, घास के मैदान एवं पशुधन प्रबंधन के बारे में इन्होंने विस्तृत विश्लेषण किया है। शोधकर्ताओं का मानना है कि विकासशील देशों में जैविक कृषि प्रणालियाँ वर्तमान पारंपरिक प्रथाओं की तुलना में अधिक उपज प्राप्त होती है। ऐसी कृषि प्रणाली जलवायु परिवर्तन के समय में ग्रामीण गरीबों के लिए खाद्य सुरक्षा और टिकाऊ आजीविका के लिये एक महत्वपूर्ण विकल्प बन सकती है। प्रमाणित जैविक उत्पाद किसानों के लिए उच्च आय के अवसर प्रदान करने और जलवायु-अनुकूल खेती की प्रथाओं को बढ़ावा देने में मदद करती है।

भारत में जैविक कृषि की सम-सामयिक स्थिति का विश्लेषण करते हुये औलख, सी. एस. एवं रविशंकर, एन. (2017) [3] ने स्पष्ट किया है कि उपभोक्ताओं में जैविक उत्पादों और किसानों में जैविक कृषि प्रथाओं के बारे में जागरूकता की कमी एक प्रमुख सीमा है। जैव उर्वरकों, जैव कीटनाशकों और जैविक मानकों के बारे में कृषकों को उन्हें जानकारी नहीं है। जैविक उत्पादों के लिए अधिक भुगतान के साथ संगठित विपणन तंत्र की कमी है। छोटे और सीमांत किसान, जो इस प्रणाली को आसानी से अपना सकते हैं, अपने जैविक उत्पादों का विपणन करने में असमर्थ हैं। जैविक खेतों का प्रमाणन एक जटिल और महँगी प्रक्रिया है, जिसे छोटे और सीमांत किसान वहन नहीं कर सकते हैं।

भारत के सिक्किम राज्य में जैविक कृषि के सामने आने वाली चुनौतियों का मूल्यांकन करते हुये दास, जयश्री और भट्टाचार्य, दीप्रो (2018) [8] ने कहा है कि जैविक कृषि एक मात्र व्यवहार्य विकल्प है जो कृषकों के सामने आया है। इस संदर्भ में, सिक्किम की कहानी सुर्खियों में है। क्योंकि इस राज्य ने देश में एकमात्र ऐसा राज्य बनने का साहस दिखाया है जो पूरी तरह से जैविक तरीके से फसलें उगाता है। वहीं तमिलनाडु क्षेत्र में जैविक कृषि की अर्थव्यवस्था और

दक्षता की पहचान करने और जैविक कृषि अवधारणा के माध्यम से किसानों की आत्महत्याओं को कम करने की संभावनाओं का विलेखन करते हुये मरियप्पन, के. एवं झोउ, डी. (2019) [12] ने स्पष्ट किया कि जैविक कृषि प्रथायें मृदा उर्वरता में सुधार, बेहतर उपज, कम आदान लागत और आधुनिक कृषि की तुलना में बेहतर परिणाम देती हैं। अध्ययन में इन्होंने सुझाव देते हुये कहा है कि खेती की लागत को कम करने के लिये छोटे और गरीब किसान जैविक कृषि के माध्यम से बेहतर फसल उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। इससे छोटे और गरीब किसानों की सामाजिक-आर्थिक समस्यायें समाप्त होगी। इस कृषि प्रणाली से भविष्य में भारतीय किसानों की आत्महत्याओं को कम किया जा सकता है।

जैविक कृषि हेतु प्रमाणन योजनाएँ

भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण देश में एक खाद्य नियामक संस्था है। यह खाद्य नियामक संस्था देश के घरेलू बाजार और आयात में जैविक खाद्य पदार्थों के नियमन के लिए जिम्मेदार है। भारत में जैविक कृषि व उत्पाद के लिये अद्योलिखित प्रमाणन की प्रक्रियायें अपनाई जाती हैं—

1. भागीदारी गारंटी प्रणाली

यह प्रमाणन प्रक्रिया जैविक उत्पादों को प्रमाणित करने की एक स्थानीय-केन्द्रित गुणवत्ता के आश्वासन की प्रणाली है, जो यह सुनिश्चित करती है कि उनका उत्पादन निर्धारित गुणवत्ता मानकों के अनुसार होता है। भागीदारी गारंटी प्रणाली उन ग्रीन उत्पादों को दिया जाता है जो रसायन-मुक्त होते हैं और जैविक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहे होते हैं, जिसमें 3 साल लगते हैं। इस तरह का प्रमाणन कार्य मुख्य रूप से घरेलू उपयोग के लिये है। इसमें उत्पादक, उपभोक्ता और अन्य हितधारक सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। वस्तुतः यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो तीसरे पक्ष के प्रमाणीकरण का विकल्प प्रदान करती है।

2. राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम

भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने 2001 में राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम प्रारंभ किया है। यह मुख्य रूप से जैविक कृषि के लिये राष्ट्रीय मानक स्थापित करता है। इस प्रमाणन योजना को यूरोपीय एवं स्विटजरलैंड द्वारा भी मान्यता प्राप्त है। जिससे भारतीय जैविक उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में स्वीकृति मिलती है। वस्तुतः यह प्रमाणन कार्यक्रम निर्यात उद्देश्यों के लिए तृतीय-पक्ष प्रमाणन की प्रक्रिया के माध्यम से जैविक कृषि उत्पाद को प्रमाणन प्रदान करता है।

जैविक कृषि को बढ़ावा देने वाली योजनाएँ

भारत सरकार ने देश में जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रमों और योजनाओं को लागू किया है। इनमें से कुछ उपयोगी एवं महत्वपूर्ण योजनाओं का उल्लेख इस प्रकार से है—

1. शून्य बजट प्राकृतिक कृषि

भारत में सुभाष पालेकर द्वारा 1990 के दशक में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के विकल्प के रूप में शून्य बजट प्राकृतिक खेती की परिकल्पना तैयार की गई थी। शून्य बजट प्राकृतिक खेती अर्थात् रासायन-मुक्त कृषि की एक ऐसी विधि है, जो पारंपरिक भारतीय कृषि प्रथाओं पर आधारित है। कृषि की यह विधि आंध्र प्रदेश में एक

जमीनी स्तर के आंदोलन के रूप में शुरू हुई और बाद में कर्नाटक में एक किसान आंदोलन के रूप में विकसित हुई। यह कृषि कृषकों में ऋण की निर्भरता कम करती है, मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती है और किसानों की आय बढ़ाने में सहायता करती है।

2. राष्ट्रीय कृषि विकास योजना

कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के समग्र विकास को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 2007 में यह योजना प्रारंभ की गई थी। वर्तमान में इस योजना को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के नाम से जाना जाता है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य राज्यों को कृषि क्षेत्र में निवेश बढ़ाने, उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि करने, किसानों की आय में सुधार करने और टिकाऊ एवं जलवायु के प्रति लचीलापन रख कर कृषि को बढ़ावा देने हेतु लागू की गई है।

3. उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के लिये जैविक मूल्य श्रृंखला विकास मिशन

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा प्रारंभ की गई यह एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है, जो राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन के अंतर्गत एक उप-मिशन है। इसे 2015 में अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा सहित सभी पूर्वोत्तर राज्यों में लागू करने हेतु शुरू किया था। इस योजना का उद्देश्य प्रमाणित जैविक उत्पादन को बढ़ावा देना तथा जैविक उत्पादों के लिये एक मजबूत मूल्य श्रृंखला को विकसित करना है, ताकि उत्पादकों को उपभोक्ताओं से जोड़ा जा सके और पूरी मूल्य श्रृंखला के विकास को समर्थन दिया जा सके।

4. परंपरागत कृषि विकास योजना

जैविक कृषि को बढ़ावा देने और रासायनिक खादों के उपयोग को कम करने के उद्देश्य से 2015 में परंपरागत कृषि विकास योजना शुरू की गई थी। यह योजना राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन के तहत मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन का एक विस्तारित घटक है जो सतत कृषि हेतु एक राष्ट्रीय मिशन का हिस्सा है। इस योजना के तहत, क्लस्टर दृष्टिकोण और भागीदारी गारंटी प्रणाली प्रमाणन के माध्यम से जैविक कृषि को बढ़ावा दिया जाता है।

5. एक जिला—एक उत्पाद

24 जनवरी 2018 में यह योजना उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा शुरू की गई थी। बाद में देश के सभी राज्यों ने कृषि के क्षेत्र में एक जिला एक उत्पाद के तहत योजनाएँ प्रारंभ की गईं। यह कार्यक्रम उत्तर प्रदेश के स्वदेशी और विशिष्ट उत्पादों को अधिक दृश्यता और बिक्री को प्रोत्साहित करने के लिए शुरू की गई है, जिससे जिला स्तर पर रोजगार सृजित हो सके। छोटे और सीमांत किसानों की लागत में कमी और उत्पादन में वृद्धि लाने के साथ-साथ आय बढ़ाने और उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में एक जिला एक उत्पाद महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

6. प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम औपचारिकरण योजना

भारत सरकार के खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय ने इस योजना को आत्मनिर्भर भारत अभियान के हिस्से के रूप में 29 जून 2020 को शुरू किया था। इसका उद्देश्य छोटे उद्यमियों को नई तकनीक और सस्ते ऋण के माध्यम से नये बाजारों में प्रवेश करने में मदद करना है।

7. राष्ट्रीय टिकाऊ कृषि मिशन

स्वस्थ मिट्टी, टिकाऊ कृषि पद्धतियों और सुरक्षित भोजन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 25 नवंबर 2024 को यह योजना एक मिशन के रूप में लागू की गई है। वर्तमान में इस योजना का नाम बदलकर राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन कर दिया गया है।

जैविक कृषि के अवसर

विश्व की जनसंख्या बढ़ रही है और इसके साथ ही खाद्य उत्पादों की माँग भी बढ़ रही है। इस माँग की पूर्ति के लिए वन, मिट्टी और पर्यावरण पर दबाव बढ़ रहा है। पिछले कुछ वर्षों में वन आवरण और जैव-विविधता में काफी कमी आयी है। भूजल स्रोत भी तेजी से क्षीण हो रहे हैं। उच्च-आदान और संसाधन-गहन खेती प्रणालियों ने बड़े पैमाने पर वनों की कटाई, जल की कमी, मिट्टी का क्षरण और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के उच्च स्तर को बढ़ाया है।

मिट्टी और पर्यावरण पर क्षरण को कम करने के लिए समग्र दृष्टिकोण जैसे कृषि पारिस्थितिकी, कृषि वानिकी, जलवायु संरक्षित कृषि की ओर परिवर्तन आवश्यक है। कृषि-पारिस्थितिकी, जिसमें जैविक कृषि शामिल है, जैसी प्रथाएँ भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता किये बिना बेहतर उपज देती हैं। जैविक कृषि को संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के साथ-साथ अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा समर्थन दिया जाता है।

भारत विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक रूप से उपलब्ध जैविक पोषक तत्वों से समृद्ध देश है। ये जैविक पोषक तत्व यहाँ के विभिन्न कृषि क्षेत्रों में जैविक कृषि को बढ़ाने में सहायक है। वास्तव में जैविक पोषक तत्व जैविक फसलों की खेती में काफी हद तक मदद करते हैं। भारत में जलवायु और पारिस्थितिकी तंत्र में व्यापक विविधता है। भारत में मजबूत आधुनिक कृषि प्रणाली, नवोन्मेषी किसान, विशाल शुष्क भूमि और रासायनिक उर्वरकों का न्यूनतम उपयोग मौजूद है।

देश के विभिन्न प्रान्तों में वर्षा की कमी वाले क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी, पूर्वोत्तर और पहाड़ी क्षेत्रों में, जहाँ रसायनों का उपयोग नगण्य है, लंबे समय से निर्वाह खेती का अभ्यास किया जाता रहा है। ऐसे क्षेत्र अपने आप जैविक कृषि को बढ़ावा देते हैं।

जैविक कृषि की वर्तमान स्थिति

जैविक कृषि करने वाले 191 देशों में भारत का एक विशिष्ट स्थान है। 2021 में लगभग 2.66 मिलियन हेक्टेयर कृषि भूमि पर जैविक कृषि की गई। वर्तमान में, भारत विश्व के जैविक कृषि भूमि के मामले में 6वें स्थान पर और जैविक उत्पादकों की कुल संख्या के मामले में प्रथम स्थान पर है। भारत में विश्व के कुल जैविक उत्पादों का 30 प्रतिशत हिस्सा है जो विश्व की कुल जैविक कृषि क्षेत्र (57.8 मिलियन हेक्टेयर) का 2.59 प्रतिशत, अर्थात् 1.5 मिलियन हेक्टेयर हिस्सा रखता है। हालाँकि, देश में कुल शुद्ध बोये गये क्षेत्र की तुलना में जैविक कृषि के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र बहुत कम है, जो यह दर्शाता है कि देश को अभी लंबा सफर तय करना है। ऐसोचेम 2018 की रिपोर्ट के अनुसार, हमारे अधिकांश जैविक किसान खराब नीतिगत उपायों, अपर्याप्त ज्ञान, बढ़ती निवेश लागत और विपणन की जाग्यकता की कमी के कारण संघर्ष कर रहे हैं।

जैविक कृषि का क्षेत्र

भारत में जैविक कृषि का कुल क्षेत्रफल लगभग 9119865.91 हेक्टेयर है, जो कुल बाये गये क्षेत्र का लगभग 4 प्रतिशत है। मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान में सबसे अधिक जैविक कृषि होती है। जबकि सिक्किम 100 प्रतिशत जैविक राज्य है। तालिका क्रमांक 1 में भारत में जैविक कृषि के तहत कुल क्षेत्र, उत्पादन, जैविक किसान, जैविक उत्पाद का निर्यात आदि को प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्र. 1: जैविक कृषि का क्षेत्र, उत्पादन, जैविक किसान, जैविक उत्पाद का निर्यात (2021-2022)

क्षेत्र	कृषि क्षेत्र (जैविक कृषि+परिवर्तित कृषि भूमि)	4726714.74 हेक्टेयर
	जंगली फसल संग्रहण क्षेत्र	4393151.17 हेक्टेयर
	कुल क्षेत्र (जैविक कृषि क्षेत्र+जंगली फसल संग्रहण)	9119865.91 हेक्टेयर
उत्पादन	जैविक कृषि उत्पादन	3410195.02 मीट्रिक टन
	जंगली फसल उत्पादन	20540.63 मीट्रिक टन
	कुल जैविक कृषि उत्पादन	3430735.65 मीट्रिक टन
किसान	कुल जैविक किसान	2480859
निर्यात	कुल निर्यात मात्रा	460320.40 मीट्रिक टन
	कुल निर्यात मूल्य (भारतीय मुद्रा में)	5249.32 करोड़ रुपये
	कुल निर्यात मूल्य (यूएस डालर में)	771.96 लाख डालर

स्रोत : कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

राष्ट्रीय जैविक उत्पादन कार्यक्रम के तहत 31 मार्च 2022 तक पंजीकृत जैविक प्रमाणीकरण प्रक्रिया के अंतर्गत कुल क्षेत्रफल 9119865.91 हेक्टेयर है। इसमें 4726714.74 हेक्टेयर कृषि योग्य क्षेत्र और जंगली फसल संग्रह के लिए 4393151.17 हेक्टेयर शामिल है। देश ने लगभग 3430735.65 मीट्रिक टन प्रमाणित जैविक उत्पादों का उत्पादन किया, जिसमें तिलहन, फाइबर, गन्ना, अनाज और बाजरा, कपास, दालें, सुगंधित और औषधीय पौधे, चाय, कॉफी, फल, मसाले, सूखे मेवे, सब्जियाँ, प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ आदि सभी प्रकार के खाद्य उत्पाद इसमें शामिल हैं।

यह उत्पादन केवल खाद्य क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है, बल्कि जैविक कपास फाइबर, कार्यात्मक खाद्य उत्पाद आदि का भी उत्पादन होता है। 2021-22 के दौरान निर्यात की कुल मात्रा 460320.40 मीट्रिक टन थी। जैविक खाद्य पदार्थों का निर्यात लगभग 5249.32 करोड़ रुपये (771.96 मिलियन अमेरिकी डॉलर) का रहा। भारत से जैविक उत्पादों का निर्यात संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय संघ, कनाडा, ग्रेट ब्रिटेन, स्विट्जरलैंड, तुर्की, ऑस्ट्रेलिया, इक्वाडोर, कोरिया गणराज्य, वियतनाम, जापान आदि देशों को किया जाता है।

तालिका क्र. 2: भारत में 2012 से 2022 तक जैविक कृषि के अंतर्गत क्षेत्र (हेक्टेयर में)

क्र. सं.	वर्ष	जैविक कृषि का क्षेत्र (हेक्टेयर में)
1.	2011-12	5550405
2.	2012-13	5211141
3.	2013-14	4719816
4.	2014-15	5690000
5.	2015-16	5710384
6.	2016-17	4452987
7.	2017-18	3566538
8.	2018-19	3428639
9.	2019-20	3669801
10.	2020-21	4339185
11.	2021-22	9119866

स्रोत : कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

तालिका क्रमांक 2 में 2011-12 से भारत में जैविक कृषि के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र का विवरण दर्शाया गया है। पिछले 10 वर्षों के दौरान प्रमाणित जैविक कृषि के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 2011-12 में 5550405 हेक्टेयर के साथ, प्रमाणित जैविक कृषि के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र में 10 वर्षों के दौरान लगभग 1.5

गुना से अधिक की वृद्धि हुई। हालांकि, अध्ययन की समय अवधि के दौरान जैविक कृषि के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र में उतार-चढ़ाव दर्ज किया गया है। वर्तमान में, 9119866 हेक्टेयर क्षेत्र प्रमाणित जैविक कृषि के अंतर्गत है और भारत जैविक कृषि के तहत कुल भूमि के मामले में विश्व स्तर पर शीर्ष 10 देशों में सम्मिलित है।

तालिका क्र. 3: जैविक प्रमाणीकरण प्रक्रिया (कृषि+जंगली फसल) के तहत राज्यवार कुल क्षेत्रफल की वृद्धि दर (हेक्टेयर में) 2016-17 से 2021-22

क्र.सं.	राज्यों का नाम	2016-17	2021-22	वृद्धि दर
1.	अण्डमान निकोबार द्वीप	0	155	—
2.	आंध्र प्रदेश	172783.03	49638.42	-0.22
3.	अरुणाचल प्रदेश	72311.27	12636.64	-0.29
4.	असम	23930.4	18102.94	-0.05
5.	बिहार	679.2	30941.01	1.15
6.	छत्तीसगढ़	179752.14	3008606.33	0.76
7.	गोवा	15762.43	18259.72	0.03
8.	गुजरात	70495.05	602248.5	0.54
9.	हरियाणा	5031.76	3198.95	-0.09
10.	हिमाचल प्रदेश	14376.72	203043.02	0.70
11.	जम्मू व कश्मीर	181608.32	59825.58	-0.20
12.	झारखंड	36813.95	58970.14	0.10
13.	कर्नाटक	81948.81	110703.45	0.06
14.	केरल	43701.88	43681.54	0.00
15.	लंदाख	0	7817.85	—
16.	लक्ष्यदीप	895.52	895.51	0.00
17.	मध्य प्रदेश	2292697.39	2370593.41	0.01
18.	महाराष्ट्र	292391.78	1133668.57	0.31
19.	मणीपुर	241.4	14628.42	1.27
20.	मेघालय	9629.6	27508.74	0.23
21.	मिजोरम	210	19038.89	1.46
22.	नागालैण्ड	4699.93	14269.27	0.25
23.	दिल्ली	9.23	12.95	0.07
24.	उड़ीसा	99736.17	184034.35	0.13
25.	पाण्डुचेरी	2.84	21.51	0.50

26.	पंजाब	17648.53	24180.6	0.07
27.	राजस्थान	539522.12	686420.61	0.05
28.	सिक्किम	75218.28	75475.28	0.00
29.	तमिलनाडू	10775.69	53388.22	0.38
30.	तेलंगाणा	9687.84	39200.47	0.32
31.	त्रिपुरा	203.56	12081.63	1.26
32.	उत्तर प्रदेश	101459.95	115590.47	0.03
33.	उत्तराखण्ड	93586.42	113747.54	0.04
34.	पश्चिम बंगाल	5176.03	7280.37	0.07
	भारत (कुल)	4452987.24	9119865.91	0.15

स्रोत : कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

तालिका क्रमांक 3 से स्पष्ट होता है कि देश के सभी राज्यों में, जिसमें छत्तीसगढ़ राज्य ने 2021-22 के दौरान जैविक प्रमाणीकरण के तहत सबसे बड़ा क्षेत्र कवर किया है, उसके बाद मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र का स्थान है। शीर्ष 10 राज्य 2021-22 में जैविक कृषि के तहत कुल क्षेत्रफल का लगभग 80 प्रतिशत हिस्सा है। देश ने 2016-17 से पिछले पांच वर्षों के दौरान 0.15 प्रतिशत की वृद्धि दर

दर्ज की है। राज्य स्तर पर, बिहार, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा ने इस अवधि के दौरान विकास दर में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की। 2016 के दौरान, सिक्किम ने अपनी संपूर्ण कृषि योग्य भूमि (75000 हेक्टेयर से अधिक) को जैविक प्रमाणीकरण के तहत परिवर्तित करने का उल्लेखनीय गौरव हासिल किया है। आंकड़े बताते हैं कि देश में जैविक कृषि के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ रही है।

तालिका क्र. 4: भारत में राज्यवार जैविक कृषि उत्पादन (वर्ष 2021-22)

क्र. सं.	राज्य	जैविक उत्पादन (मीट्रिक टन में)	रूपांतरण उत्पादन (मीट्रिक टन में)	कुल उत्पादन (मीट्रिक टन में)
1.	आंध्र प्रदेश	18751.55	907.71	19659.26
2.	अरुणाचल प्रदेश	81.55	0	81.55
3.	असम	15897.00	0	15897.00
4.	बिहार	12.11	0	12.11
5.	छत्तीसगढ़	21841.22	518.1	22359.32
6.	गोवा	2652.76	9.39	2662.15
7.	गुजरात	122155.19	136518.84	258674.03
8.	हरियाणा	4547.48	0	4547.48
9.	हिमांचल प्रदेश	3486.48	0	3486.48
10.	जम्मू व कश्मीर	38640.64	0	38640.64
11.	कर्नाटक	150640.95	12.1	150653.05
12.	केरल	31965.48	0	31965.48
13.	मध्य प्रदेश	1262966.52	147927.97	1410894.49
14.	महाराष्ट्र	581164.05	110255.67	691419.72
15.	मणिपुर	121.67	0	121.67
16.	मेघालय	10192.01	0	10192.01
17.	नागालैण्ड	1192.87	0	1192.87
18.	उड़ीसा	135999.21	47604.82	183604.02
19.	पंजाब	443.35	0	443.35
20.	राजस्थान	331900.65	15.060.67	346961.32
21.	सिक्किम	20.17	0	20.17
22.	तमिलनाडू	31005.87	458.99	31464.86
23.	तेलंगाणा	3871.64	0	3871.64
24.	त्रिपुरा	339.83	0	339.83
25.	उत्तर प्रदेश	131812.92	0	131812.92
26.	उत्तराखण्ड	31719.74	0	31719.74
27.	पश्चिम बंगाल	17497.89	0	17497.89
	भारत (कुल)	2950920.79	459274.24	3410195.02

स्रोत : कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

वर्ष 2021-22 में राज्यवार जैविक कृषि उत्पादन के आंकड़ों से ज्ञात होता है कि भारत में मध्य प्रदेश सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। उसके बाद महाराष्ट्र, राजस्थान, कर्नाटक और उड़ीसा का स्थान है। वस्तुओं के संदर्भ में, फाइबर फसलें सबसे बड़ी श्रेणी हैं, इसके बाद तिलहन,

चीनी फसलें, अनाज और बाजरा, औषधीय/हर्बल और सुगंधित पौधे, मसाले और ताजे फल सब्जियां, दालें, चाय और कॉफी हैं। इससे पता चलता है कि देश में जैविक कृषि के अंतर्गत फसलों का दायरा व्यापक है।

तालिका क्र. 5: भारत में राज्यवार जैविक उत्पाद का निर्यात (वर्ष 2021-22)

क्र.सं.	राज्य का नाम	निर्यात मात्रा (मीट्रिक टन में)	कुल मूल्य (करोड़ में)	कुल मूल्य (मिलियन यूएस डॉलर में)
1.	आंध्र प्रदेश	2720.27	76.76	11.29
2.	असम	5.87	0.29	0.04
3.	छत्तीसगढ़	59.9	4.25	0.62
4.	दमन एवं दीव	16532.39	134.13	19.73
5.	गोवा	175.33	10.91	1.6
6.	गुजरात	60023.78	727.09	106.92
7.	हरियाणा	29093.98	270.66	39.8
8.	हिमांचल प्रदेश	11.56	4.13	0.61
9.	जम्मू व कश्मीर	539.55	8.92	1.31
10.	कर्नाटक	22075.80	419.6	61.71
11.	केरल	7337.49	308.59	45.38
12.	मध्य प्रदेश	176385.91	1292.55	190.08
13.	महाराष्ट्र	85526.16	696.71	102.46
14.	नई दिल्ली	24771.90	199	29.26
15.	उड़ीसा	15.75	0.36	0.05
16.	पंजाब	182.4	2.2	0.32
17.	राजस्थान	9142.59	109.17	16.05
18.	तमिलनाडू	6281.77	123.32	18.14
19.	तेलंगाणा	7310.18	209.16	30.76
20.	उत्तर प्रदेश	6968.17	333.4	49.03
21.	उत्तराखण्ड	285.43	11.58	1.7
22.	पश्चिम बंगाल	4874.22	306.57	45.08
	कुल	460320.4	5249.32	771.96

स्रोत : कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

जैविक वस्तुओं के निर्यात में भारत का महत्वपूर्ण योगदान है। वित्तीय वर्ष 2022 में, भारत से जैविक उत्पादों का निर्यात मूल्य 771.96 मिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है। यह 2015 के 327 मिलियन अमेरिकी डॉलर के निर्यात मूल्य की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि है। राज्य स्तर पर, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा, नई दिल्ली और कर्नाटक ने 2021-22 में जैविक वस्तुओं के निर्यात में प्रमुख हिस्सेदारी दर्ज की है।

जैविक कृषि की चुनौतियाँ

भारत में, 1960 के दशक की शुरुआत में हरित क्रांति का विस्तर हुआ। हरित क्रांति के कारण कृषि में आधुनिक रासायनिक उर्वरकों की शुरुआत हुई, कृषि बीजों का बेहतर प्रबंधन हुआ, साथ ही नई और आधुनिक कृषि तकनीकों की शुरुआत हुई। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग के कारण, कई क्षेत्रों की भूमि ऐसी स्थिति में पहुँच गई जहाँ कृषक अब अपने कृषि भूमि में कुछ भी उत्पादन नहीं करते हैं। जैसे-जैसे उपभोक्ता स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं, जैविक उत्पादों की माँग बढ़ी है। रासायनिक रूप से उर्वरित भूमि को जैविक कृषि भूमि में परिवर्तित करने में कृषकों के पास कई तरह की चुनौतियाँ हैं। हालांकि, व्यापक

दृष्टिकोण से, उचित उपायों का अपना कर और सरकारी नीतियों के साथ इन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। भारत में जैविक कृषि के क्षेत्र में निम्नलिखित चुनौतियाँ हैं-

1. जैविक खाद्य की आपूर्ति-माँग में असमानता

फलों और सब्जियों के मामले में, उत्पादन स्थानीय होना चाहिये, अन्यथा अधिकांश जैविक खाद्य समय पर खुदरा विक्रेता के पास तक नहीं पहुँचता, और यदि पहुँचता भी है, तो उसकी विपणन क्षमता कम हो जाती है। स्थानीय उत्पादन के लिए अर्थात् जहाँ से माँग सृजित होती है, उस क्षेत्र में इच्छुक कंपनियों, एकत्रीकरणकर्ताओं और किसानों की आवश्यकता को पूरा करने हेतु माँग की आपूर्ति पूरी की जाती है। सामान्यतः माँग बड़े महानगरों से आती है, और यही वे क्षेत्र हैं जहाँ जैविक फल और सब्जियाँ उत्पादन करने के लिए स्वच्छ कृषि भूमि नहीं मिलती। यही इस असमानता का मुख्य कारण है।

2. जैविक बीजों और खादों (आदानों) की कमी

बीज और खाद (आदान) अत्यधिक विनियमित हैं और सरकारी नीतियों द्वारा नियंत्रित होते हैं। जहाँ सरकार रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के लिए सब्सिडी प्रदान करती है, वहीं जैविक आदानों

के लिए ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है। बीजों के लिये प्रमाणन कार्यक्रम उपलब्ध है, लेकिन प्रमाणित बीजों की कोई मान्यता नहीं है। प्रमाणित जैविक बीजों की उपलब्धता जैविक कृषि के लिये एक प्रमुख मुद्दा है। इसलिए ज्यादातर समय किसानों को पारंपरिक बीजों के उपयोग हेतु सलाह दी जाती है और मजबूर किया जाता है। क्योंकि कृषि बीजों को रसायनों के साथ उपचारित किया जाता है।

3. भ्रमित प्रमाणन ढाँचा

बाजार में जैविक उत्पाद के रूप में बिकने वाले उत्पाद के लिए प्रमाणन अनिवार्य कर दिया गया है, लेकिन इससे किसानों और उपभोक्ताओं दोनों में भारी भ्रम की स्थिति पैदा हो गई है। उच्च प्रमाणन लागत के कारण किसान अपनी फसलों के लिए प्रमाणन प्राप्त करने के लिए परेशान रहते हैं। वास्तव में, प्रमाणन लागत का अधिकांश हिस्सा किसानों व उत्पादनकर्ता द्वारा निजी प्रमाणन निकाय (तृतीय पक्ष) ले लेते हैं। सरकार भी विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से लागत को अन्तर्निहित करने की सुविधा प्रदान करती है। इसी तरह किसान व उत्पादनकर्ता दोनों ब्रांड्स नियमों और उसकी लागत को लेकर भ्रमित हैं।

4. जैविक खाद्य उत्पादों की उच्च कीमत

जैविक उत्पादों की कीमतें पारंपरिक उत्पादों की तुलना में ज्यादा होती हैं। क्योंकि इनकी खेती में लागत अधिक आती है, पैदावार कम होती है और प्रमाणीकरण महंगा होता है। भारतीय ग्राहक आमतौर पर सस्ते उत्पादों को प्राथमिकता देते हैं जिसके कारण जैविक उत्पादों की मांग सीमित रहती है। इससे जैविक बाजार का विस्तार प्रभावित होता है। लागत कम करने और जागरूकता बढ़ाने से जैविक उत्पादों की स्वीकार्यता बढ़ सकती है। महँगी जैविक कृषि विधियों, सीमित उत्पादन, आपूर्ति श्रृंखला में अनियमितता, भंडारण और संरक्षण से लेकर बाजार प्रतिस्पर्धा आदि सभी जैविक उत्पाद लागत के मामले में उच्च मूल्य के होते हैं। लेकिन सरकारी समर्थन और उचित आपूर्ति श्रृंखला तंत्र के साथ कीमतों को कम किया जा सकता है। इसके अलावा, लम्बे समय में जैविक भोजन के लाभों को समझने के लिए जन जागरूकता और ज्ञान भी महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव

जैविक कृषि भारतीय संस्कृति का एक प्रमुख हिस्सा है। यह कृषि प्रणाली प्रकृति और पृथ्वी पर जीवन के संरक्षण को सर्वोच्च दर्शन के रूप को स्पष्ट करती है। जैविक खाद्य पदार्थों की लोकप्रियता तेजी से बढ़ रही है, क्योंकि उपभोक्ता ऐसे खाद्य पदार्थ तलाश कर रहे हैं जो स्वास्थ्यवर्धक और सुरक्षित माने जाते हैं। वर्तमान समय में लोग अपने स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक हुये हैं, जिसके परिणामस्वरूप जैविक उत्पादों की माँग में वृद्धि हुई है। इसीलिये भारत में जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने कई तरह की योजनाएँ शुरू की है। आधुनिक कृषि प्रथाओं से जैविक कृषि प्रथाओं में परिवर्तन करने से फसलों की उपज क्षमता में वृद्धि होती है, मिट्टी का स्वास्थ्य सुधरता है और स्थिरता लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। इन सभी अवसरों के बावजूद, जैविक किसानों को कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जैसे प्रमाणित आदानों की कमी, प्रमाणन प्रक्रिया में भ्रम और पारंपरिक उत्पादों की तुलना में जैविक उत्पादों की उच्च कीमत के कारण माँग में कमी।

भारत में जैविक खाद्य उद्योग फल-फूल रहा है, इसे एक अलग उद्योग के रूप में मान्यता दी जानी चाहिये। सरकार और निजी क्षेत्र

दोनों को उत्पादकों, प्रसंस्करणकर्ताओं और उपभोक्ताओं को समग्र रूप से लाभ पहुँचाने के लिये एक मजबूत नीति विकसित करने की आवश्यकता है। साथ ही किसानों को प्रमाणन प्रक्रिया के बारे में जागरूक करने के लिए कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें सब्सिडी प्रदान किया जाना चाहिये। यदि स्थिर निवेश और वर्तमान में नई पहलों पर लाभ प्रदान किया जाय, तो भारत में जैविक कृषि के विकास की अपार संभावनाएँ और अवसर हैं। भारत में जैविक कृषि के विकास में सबसे बड़ी बाधा जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए टोस निर्णय लेने हेतु सरकारी नीतियों का अभाव है। बढ़ती जनसंख्या और संसाधनों की घटती आपूर्ति के साथ, खाद्य सुरक्षा पर ध्यान देने की महती आवश्यकता है। इसलिये व्यवहार्य और टिकाऊ तरीके से आज हमें कृषि में उत्पादन बढ़ाने की जरूरत है। स्वच्छ एवं हरित पर्यावरण का संरक्षण अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसके लिये पर्यावरणीय स्थिरता बनाये रखना हम सबकी जिम्मेदारी है। जिसे जैविक कृषि के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। भारत में विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियों के कारण, यहाँ प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संसाधन की अपार क्षमता उपलब्ध हैं, जिससे सभी प्रकार के जैविक उत्पादों का उत्पादन किया जा सकता है। जैविक उत्पादकों के लिए घरेलू, वैश्विक और निर्यात क्षेत्रों में लगातार बढ़ते बाजार का लाभ उठाया जा सकता है।

संदर्भ स्रोत

1. एपीडा, वार्षिक प्रतिवेदन, कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण, 2022.
2. अर्चना के. जैविक कृषि के विकास में भारतीय सरकार की भूमिका, जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर एंड वेटेरनरी साइंस. 2013;2:32-39.
3. औलख सी. एस. एवं रविशंकर एन. भारतीय संदर्भ में जैविक कृषि : एक परिप्रेक्ष्य, कृषि अनुसंधान पत्रिका. 2017 जून;54(2):149-164.
4. भट्टाचार्य पी., चक्रवर्ती जी. भारत एवं अन्य देशों में जैविक कृषि की वर्तमान स्थिति, इंडियन जर्नल ऑफ फर्टिलाइजर्स. 2005;1(9):111-123.
5. बोडापति, एस. एवं चंदर, एम., स्थायी जैविक कृषि के लिए किसानों के स्वदेशी ज्ञान का एकीकरण : भारत के उत्तराखंड राज्य का एक मूल्यांकन, इंडियन जर्नल ऑफ ट्रेडिशनल नॉलेज. 2013;12(2):259-264.
6. चंद्रशेखर एच. एम. भारत में जैविक कृषि का बदलता परिदृश्य: एक अवलोकन, इंटरनेशनल एनजीओ जर्नल. 2010;5:34-39.
7. चोपड़ा ए, राव एन. सी., गुप्ता एन., वशिष्ठ एस. धूप हो या बारिश; जैविक खाद्य हमेशा सही दिशा में : एक भविष्यवादी दृष्टिकोण, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ न्यूट्रिशन, फार्माकोलॉजी न्यूरोलॉजिकल डिजीज. 2013;3:202-205.
8. दास जयश्री, भट्टाचार्य दीप्रो. सिविकम में जैविक कृषि की चुनौतियों का मूल्यांकन, बिजनेस स्टडीज, जनवरी-जुलाई, 2018, खंड-XXXIX, संख्या 1 एवं 2.
9. देशमुख एम. एस. एवं बाबर, एन. भारत में जैविक कृषि की वर्तमान स्थिति और संभावनाएँ, यूरोपियन एकेडमिक रिसर्च. 2015;3(4):4271-4287.
10. कौशिक के. के. टिकाऊ कृषि : मुद्दे और नीतिगत निहितार्थ, प्रोडक्टिविटी. 1997;37(4):142-147.

11. मीमकेन ई. एम, क्यूम एम. जैविक कृषि, खाद्य सुरक्षा और पर्यावरण, एनुअल रिव्यू ऑफ रिसोर्स इकोनॉमिक्स. 2018;10:39–63.
12. मरियप्पन क., झोउ डी. किसानों की आत्महत्या का खतरा एवं भारत में टिकाऊ कृषि विकास के लिए जैविक कृषि का अवसर, स्टेनैबिलिटी. 2019;11(2400):1–17.
13. नारायणन एस, नारायणन एस. भारत में जैविक कृषि : प्रासंगिकता, समस्याएँ और बाधाएँ, नेशनल बैंक फॉर एग्रीकल्चर एंड रूरल डेवलपमेंट, मुंबई, 2005.
14. पांडे जे., सिंह ए. जैविक कृषि में अवसर और बाधाएँ : एक भारतीय परिप्रेक्ष्य, जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च. 2012;56(1):47–72.
15. पनीरसेल्वम पी., हलबर्ग एन., वास्ट एम., हरमनसन जे. ई. भारतीय किसानों का जैविक कृषि के साथ अनुभव और धारणाएँ, रिन्यूएबल एग्रीकल्चर एंड फूड सिस्टम्स. 2012;27(2):157–169.
16. रेड्डी बी. एस. जैविक कृषि : स्थिति, मुद्दे और संभावनाएँ—एक समीक्षा, एग्रीकल्चरल इकोनॉमिक्स रिसर्च रिव्यू. 2010;23:343–358.
17. रॉयचौधरी आर., अब्देल गव्वाद एम. आर., बनर्जी यू., बिष्णु एस, ताह जे. भारत में जैविक कृषि की स्थिति, रुझान और संभावनाएँ : एक समीक्षा, जर्नल ऑफ प्लांट बायोलॉजी रिसर्च. 2013;2:38–48.
18. स्मिता भूटानी, सिमरित काहलोन, मोनिका. भारत में जैविक कृषि : एक वैकल्पिक कृषि प्रणाली, एमिटी जर्नल ऑफ एग्रीबिजनेस. 2018;3(1):37–49.
19. सिंह एम. स्थायी कृषि के लिए जैविक कृषि, इंडियन जर्नल ऑफ ऑर्गेनिक फार्मिंग. 2021;1(1):1–8.
20. शुक्ला ए, पटेल बी. आर., पटेल ए. एन., पटेल ए. आर. संधारणीय कृषि के लिये जैविक कृषि, किसान वर्ल्ड. 2011;38(3):39–42.
21. यादव एम. स्वस्थ राष्ट्र की ओर : भारत में जैविक कृषि और सरकारी नीतियाँ, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च एंड डेवलपमेंट. 2017;2:153–159.
22. यादव एस. के., बाबू एस., यादव एम. के., सिंह के., यादव जी. एस., पाल एस. उत्तरी भारत में स्थायी कृषि के लिए जैविक कृषि की समीक्षा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एग्रोनॉमी, 2013, 2–10.